सम्पादकीय

विपक्ष की पहली प्राथमिकता

हंगामा सदन में यह स्वभाव ठीक नहीं

संसद का कोई भी सत्र हो, उसकी शुरुआत हंगामे से होना एक परंपरा का रूप ले चुका है। यह एक खराब परंपरा है, लेकिन यह इसके बाद भी जारी है कि इससे किसी को कुछ हासिल नहीं होता-उस विपक्ष को भी नहीं, जो हंगामा करता है। विडंबना यह है कि वह हंगामे को अपनी जीत की तरह प्रस्तुत करता है।

संसद में इस या उस मुद्दे के बहाने हंगामा करना एक राजनीतिक स्वभाव बन गया है। जब जो दल विपक्ष में होता है, वह हंगामा करना पसंद करता है और वह भी तब, जब वह सत्ता में रहते समय हंगामे से त्रस्त हो चुका होता है। इस पर हैरानी नहीं कि संसद के शीतकालीन सत्र के पहले ही दिन दोनों सदनों में हंगामा हुआ।

विपक्ष को हंगामा मचाने की इतनी जल्दी थी कि दिवंगत सांसदों को श्रद्धांजलि देने के तुरंत बाद ही हंगामा किया जाने लगा। क्या इसलिए कि उसकी पहली प्राथमिकता हंगामा करना ही था? संसद के आने वाले दिन भी हंगामे भरे हों तो आश्चर्य नहीं, क्योंकि विपक्ष ने पहले ही संकेत दे दिया था कि वह इन-इन मुद्दों को संसद में उठाएगा।

विपक्ष यदा-कदा अपने हिसाब से ज्वलंत मुद्दों को उठाता है, लेकिन उन पर सार्थक बहस करने और सरकार से जवाब मांगने के बजाय उसकी दिलचस्पी इसमें अधिक होती है कि संसद चलने न पाए। आम तौर पर विपक्ष संसद में सरकार को घेरने के लिए मुद्दों का चयन खुद नहीं करता। वह उन मुद्दों को लेकर आगे आ जाता है, जो संसद सत्र के पहले से ही चर्चा में आ गए होते हैं।

यह पहले से तय था कि मणिपुर और अदाणी प्रकरण के साथ संभल का मामला भी विपक्ष की कार्यसूची में आ जाएगा। ऐसे मामले उसकी कार्यसूची में होने ही चाहिए, लेकिन क्या उसके लिए यह भी आवश्यक नहीं कि वह अपने स्तर पर जनता से जुड़े कुछ मुद्दों का चयन करे और इसके लिए प्रयत्न करे कि सरकार उन पर जवाब दे?

शिक्षा, स्वास्थ्य, शहरीकरण समेत न जाने कितने ऐसे विषय हैं, जिन पर संसद में व्यापक विचार-विमर्श होना चाहिए। पता नहीं क्यों विपक्ष इन विषयों पर संसद में चर्चा के लिए गंभीर नहीं दिखता? विपक्ष हंगामा कर संसद को बाधित करते रह सकता है, लेकिन वह ऐसा करके जनता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकता। जनता हंगामा नहीं, राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर सरकार का जवाब चाहती है। संसद में हंगामा करते रहने की अपनी आदत पर विपक्ष को तो विचार करना ही चाहिए, सत्तापक्ष को भी यह देखना चाहिए कि संसद सही ढंग से कैसे चले? इसके लिए उसे विपक्ष को भरोसे में लेने के साथ ही महत्वपूर्ण मुद्दों पर गंभीर विचार-विमर्श के लिए माहौल बनाने के लिए आगे आना चाहिए। सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच कटुता दूर होनी चाहिए। यह तभी संभव है, जब दोनों पक्ष एक-दूसरे को आदर देंगे।

विशेष

मेडिकल टूरिज्म का गढ़ बनता भारत, आधुनिक चिकित्सा के साथ आयुर्वेद भी प्रचलित

सरकार को मेडिकल टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए एक स्पष्ट नीति बनानी चाहिए जिसमें उचित नियम-विनियमन और प्रोत्साहन शामिल हो। भारत को अपने मेडिकल टूरिज्म का प्रचार करने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मार्केटिंग अभियान भी चलाना चाहिए। टेलीमेडिसिन ई-परामर्श और अन्य डिजिटल स्वास्थ्य सेवाओं को अपनाकर भी भारत मेडिकल टूरिज्म को गति दे सकता है।

■ आरके सिन्हा

हाल में यूजीसी नेट में आयुर्वेद बायोलाजी को एक विषय के तौर पर शामिल करने का फैसला हो या फिर सुप्रीम कोर्ट के समक्ष पीएम जन आरोग्य योजना में पारंपरिक चिकित्सा पद्धति को भी शामिल करने की मांग, इससे यही पता चलता है कि आयुर्वेद और पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों की महत्ता बढ़ रही है। इसका प्रमाण तब भी मिला था, जब यह खबर आई थी कि ब्रिटेन के किंग चार्ल्स बेंगलुरु के पास एक आधुनिक आरोग्यशाला में पत्नी कैमिला समेत स्वास्थ्य लाभ के लिए आए। इससे बेहतर और कुछ नहीं कि आधुनिक चिकित्सा पद्धति से सस्ते और सफल इलाज के साथ ही विदेशियों में भारत की परंपरागत चिकित्सा पद्धतियों जैसे- आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, आहार विज्ञान जैसे उपचार लोकप्रिय हो रहे हैं।

योग तो पहले से ही दुनिया भर में लोकप्रिय है। इस संदर्भ में यह भी स्मरण किया जाना चाहिए कि केरल के एर्नाकुलम स्थित श्रीधरीयम आयुर्वेदिक नेत्र अस्पताल द्वारा प्रदान की गई चिकित्सा के चलते केन्या के पूर्व प्रधानमंत्री रैला ओडिंगा की पुत्री की आंखों की रोशनी वापस आ गई थी। यह किसी चमत्कार से कम न था। इसके बाद अफ्रीकी देशों से बड़ी तादाद में रोगी आयुर्वेदिक चिकित्सा के लिए भारत आने लगे।

मैं अक्सर देहरादून जाता रहता हूं। हर बार मुझे वहां अनेक विदेशी मिल जाते हैं। उनसे बातचीत करने पर पता चलता है कि अधिकांश हरिद्वार, ऋषिकेश, देहरादून या आसपास की आरोग्यशालाओं में आए होते हैं। कुछ तो महीनों के लिए आते हैं। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि कोरोना काल में दुनिया का आयुर्वेद पर भरोसा बढ़ा। इसके चलते विश्व के कई देशों में आयुर्वेदिक दवाओं की मांग बढ़ी है। आज करीब सौ देशों में भारत के हर्बल उत्पाद पहुंच रहे हैं।

आयुर्वेद की महत्ता को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी स्वीकार किया है। यह सही समय है कि आयुर्वेद के साथ अन्य पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों में शोध को बढ़ावा दिया जाए। अब यह सिद्ध होता जा रहा है कि खानपान के जरिये भी सेहत का ध्यान रखा जा सकता है। इनमें मोटे और छोटे अनाज की महती भूमिका है। मिलेट्समैन कहे जाने वाले पद्मश्री डा. खादरवली का दावा है कि मिलेट्स से अनेक रोगों का इलाज संभव है।

उनका कहना है कि छह हफ्ते से लेकर छह महीने तक सिर्फ मिलेट्स के प्रयोग से कई बीमारियों के निदान में सफलता मिलती है। भारत में बीते कुछ वर्षों से हृदय रोग, अस्थि रोग, किडनी एवं लिवर ट्रांसप्लांट और दिल की तमाम बीमारियों के सफल इलाज के लिए दक्षिण एशियाई देशों के अलावा अफ्रीका, मध्य एशिया और खाड़ी के देशों से लेकर पश्चिमी देशों से भी हर साल लाखों रोगी आ रहे हैं। कुछ वर्षों से दिल्ली-एनसीआर, मुंबई, बेंगलुरु, चंडीगढ़ आदि के आधुनिक अस्पतालों में इलाज कराने के लिए भारी संख्या में विदेशी आने लगे हैं। दुनिया भर में बसे भारतवंशी भी स्वदेश में अपना इलाज कराना पसंद कर रहे हैं। इससे भारत मेडिकल टूरिज्म का गढ़ बन रहा है। देश के नामी प्लास्टिक सर्जन बताते हैं कि उनके पास हर महीने विदेशी बर्न इंजरी के इलाज से लेकर हेयर ट्रांसप्लांट और अपनी ढीली पड़ती त्वचा को ठीक कराने के लिए आते हैं।

हमें ऐसी नीतियां अपनानी चाहिए, जिससे अधिक से अधिक विदेशी रोगी इलाज के लिए भारत आएं। उनके भारत आने से देश को अमूल्य विदेशी मुद्रा भी प्राप्त होगी। जब भी एक रोगी भारत आता है तो उसके साथ दो-तीन तीमारदार भी आते हैं। वे महीनों यहां रहते हैं। भारत में विदेश से रोगी इसलिए भी आ रहे हैं, क्योंकि यहां पर मरीजों को सर्वश्रेष्ठ प्री और पोस्ट-सर्जरी सुविधाएं यूरोप या अमेरिका की तुलना में बहुत कम कीमत पर मिल जाती हैं।

भारत के पास योग्य चिकित्सा पेशेवर और अत्याधुनिक उपकरण हैं। इसके अलावा भारत स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता से समझौता किए बिना अमेरिका और ब्रिटेन की तुलना में कम खर्चीला उपचार विकल्प प्रदान करता है। भारत में इलाज का खर्च अमेरिका के मुकाबले करीब एक चौथाई है। यदि हम इस मोर्चे पर संभल कर चले तो फिर विदेशी इलाज के लिए थाइलैंड, सिंगापुर और जापान जैसे देशों के बजाय भारत का ही रुख करने लगेंगे।

मेडिकल टूरिज्म अरबों डालर का सालाना कारोबार है। इस पर भारत को अपनी पकड़ मजबूत बनानी होगी। इस क्षेत्र में भारत के सामने तमाम संभावनाएं हैं, क्योंकि सारी दुनिया के लोग बेहतर इलाज के लिए अपने देशों की सरहद लांघने लगे हैं। गोवा में आयोजित जी-20 से जुड़े एक कार्यक्रम में बताया गया था कि 2022 में 14 लाख विदेशी इलाज के लिए भारत आए।

यह आंकड़ा ही साबित करता है कि भारत की मेडिकल सुविधाओं को लेकर दुनिया में भरोसा बढ़ रहा है, लेकिन हमें 2030 तक अपने यहां हर साल एक करोड़ तक विदेशी रोगियों को इलाज के लिए बुलाने के उपाय करने होंगे। इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए भारत को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप अस्पतालों और क्लीनिकों का निर्माण करके गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए।

सरकार को मेडिकल टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए एक स्पष्ट नीति बनानी चाहिए, जिसमें उचित नियम-विनियमन और प्रोत्साहन शामिल हो। भारत को अपने मेडिकल टूरिज्म का प्रचार करने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मार्केटिंग अभियान भी चलाना चाहिए। टेलीमेडिसिन, ई-परामर्श और अन्य डिजिटल स्वास्थ्य सेवाओं को अपनाकर भी भारत मेडिकल टूरिज्म को गति दे सकता है। भारत को आधुनिक चिकित्सा के साथ ही आयुर्वेद एवं अपनी अन्य परंपरागत चिकित्सा पद्धतियों के प्रचार-प्रसार पर और ध्यान देना होगा। इसका एक बड़ा लाभ यह होगा कि बड़ी संख्या में युवाओं को रोजगार मिलेंगे।

(लेखक पूर्व सांसद और पूर्व संपादक हैं)

प्रदेश

उर्स पर हों माकूल व्यवस्थाएं

क्षेत्रीय निवासियों ने मेला मजिस्ट्रेट को सौंपा ज्ञापन

मॉर्निंग न्यूज @ अजमेर

ख्वाजा साहब के सालाना उर्फ के मौके पर जिला प्रशासन द्वारा की जाने वाली व्यवस्थाओं को लेकर क्षेत्रीय निवासियों ने उर्स मेला मजिस्ट्रेट गजेंद्र सिंह को ज्ञापन सौंपा है। क्षेत्र निवासियों ने बताया कि उर्स की व्यवस्थाओं को लेकर प्रशासनिक बैठक के होती है लेकिन मौके पर कई कार्य अधूरे रह जाते हैं तथा उर्स प्रारंभ होने के बाद लीपापोती कर व्यवस्थाएं पूरी करने की कवायद कर ली जाती है जिससे आने वाले जायरीन को परेशानी उठानी पड़ती है। स्थानीय दुकानदारों व निवासियों को दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। मेला मजिस्ट्रेट गजेंद्र सिंह को बताया गया कि क्षेत्र में उर्स से पहले मेला क्षेत्र में पानी की व्यवस्था का ध्यान रखा जाए ताकी आने वाले जायरीनों को दिक्कत का सामना ना करना पड़े। दरगाह गेस्ट हाउस में बने बी ब्लॉक और जी ब्लाक जायरीनों के ठहरने लायक नहीं है यहा मेजर क्रेक्स व जगह-जगह से प्लास्टर हटे हुऐ है यहा कोई भी हादसा होने की सम्भावना है। खादिम मौहल्ला शैरगरान

ख्वाजा चौक से छतरी गेट तक व अन्दर कोर्ट में छर्नेशवर मन्दिर के रास्ते से बिजली के खम्बो को हटा कर इस क्षेत्र को पोल लेस किया जाए। यहा पहले हादसा हो चुका है। अन्दर कोर्ट में आने वाली संपर्क सडक लंबे समय से क्षतिग्रस्त हो रखी है। खादिम मोहल्ला और अन्दर कोर्ट की सड़को की मरम्मत करवाई जाए। इसके साथ ही दरगाह शरीफ के मेन गेट के बाहर आए दिन मेन नाली बन्द होने की वजह से दरगाह के मेन गेट के बाहर गन्दा पानी बहने की वजह से ईस क्षेत्र के लोगों व जायरीनो को आए दिन परेशानीयों का सामना करना पड़ता है इन परेशानीयों का परमानेन्ट निपटारा करवाया जाए। अन्दर कोर्ट व खादिम मोहल्ले में लगी स्ट्रीट लाईट कम पावर की लगी हुई है। यहा ज्यादा पावर की लाईटे लगाई जाए ताकी रोशनी का माकुल इन्तजाम हो सके। आदि सहित विभिन्न मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपा है। क्षेत्रीय निवासियों ने मेला मजिस्ट्रेट से आने वाले उर्स की व्यव्सथाओं को लेकर जिला प्रशासन के द्वारा रखी गई बैठक के बाद नसीरुद्दीन चिश्ती दरगाह दिवान के पुत्र के द्वारा मिडिया को दिए गए बयान पर एतराज जताया है। इस दौरान सैय्यद अनवर चिश्ती, पार्षद शाकिर, गुलाम मुस्तफा चिश्ती, अब्दुल नईम खान, सैय्यद फखरे मोइन हाजी रईस कुरेशी,हाजी इफ्तेखार चिश्ती अहसान मिर्जा,मोहम्मद वाहिद, पूर्व पार्षद अम्माद चिश्ती, सैय्याद महफूज नियाज़ी, रियाज मसूरी, अब्दुल अजीज मंसूरी, रुहूल अमीन, इकबाल मोहम्मद, हाजी सैय्यद सलीम बना, मो. सलमान आदि मौजूद रहे।

राजकीय विद्यालय राणौली में मनाया संविधान दिवस

मॉर्निंग न्यूज @ जयपुर। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय राणौली में संविधान दिवस समारोह का आयोजन किया गया। पीईईओ बीछा पूरणमल बैरवा एवं प्रधानाचार्य सूरज मल बुनकर ने संविधान निर्माता डॉ. बी.आर.अंबेडकर के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। समारोह में वर्तमान परिदृश्य में अंबेडकर के विचारों की प्रासंगिकता विषय पर भाषण एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने भाषण एवं निबंध प्रतियोगिता में

भाग लिया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य सूरज मल बुनकर ने संविधान की मूल बातें एवं इसके महत्व के बारे में विद्यार्थियों को जागरुक करते हुए संविधान का पालन करने के लिए प्रेरित किया।कार्यक्रम में संविधान की उद्देशिका का वाचन किया गया व संविधान में उल्लेखित मूल कर्तव्यों का पालन करने का संकल्प लिया गया। प्रधानाचार्य बुनकर द्वारा इस अवसर पर कार्यक्रम में अतिथियों को संविधान की प्रति भेट कर सम्मान किया गया। इस अवसर पर प्रेमवीर सिंह,उमाशंकर सैनी, मंजू देवी,आरती जांगिड़,मंजू कुम्हार,गोपाल लाल मीणा,विश्व बंधु शर्मा, हरिशंकर सोनी उपस्थित रहे।

आईसीआईसीआई प्रू गारंटीड पेंशन प्लान फ्लेक्सी से महंगाई से निबटने की पहल

मुंबई (एजेंसी)। आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस ने अपने नियमित भुगतान वार्षिकी उत्पाद, आईसीआईसीआई प्रू गारंटीड पेंशन प्लान फ्लेक्सी के लिए 'बढ़ती आय' सुविधा शुरू की है, जो उद्योग का पहला प्रोडक्ट है। यह सुविधा ग्राहकों को वार्षिकी भुगतान में सालाना पांच प्रतिशत की वृद्धि प्रदान करती है, जो सेवानिवृत्त व्यक्तियों को महंगाई से निपटने में मदद कर सकती है। 'बढ़ती आय' सुविधा के साथ आईसीआईसीआई प्रू गारंटीड पेंशन प्लान फ्लेक्सी ग्राहकों को अपने जीवन स्तर को बनाए रखने में सक्षम बना सकती है, क्योंकि महंगाई समय के साथ उनकी क्रय शक्ति को कम करती है।

आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस के मुख्य उत्पाद और वितरण अधिकारी श्री अमित पल्टा ने कहा, एन्युटी प्रोडक्ट सेवानिवृत्त व्यक्तियों को एक गारंटीकृत स्थायी आय प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। हम मानते हैं कि मुद्रास्फीति व्यक्तियों के जीवन स्तर को प्रभावित करती है, विशेष रूप से सेवानिवृत्त लोगों को, जिन्हें वेतन में आवधिक वृद्धि का लाभ नहीं मिलता है। इस चुनौती का समाधान करने के लिए, हमने आय में वृद्धि सुविधा शुरू की है। यह उद्योग में अपनी तरह की पहली सुविधा है, जो हमारे नियमित प्रीमियम भुगतान वार्षिकी उत्पाद - आईसीआईसीआई प्रू गारंटीड पेंशन प्लान फ्लेक्सी में पेश की जा रही है।

आय में वृद्धि सुविधा की शुरुआत ग्राहकों को उनके वित्तीय सफर को आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक संसाधनों से लैस करके उन्हें बेहतर अनुभव प्रदान करने के हमारे दृष्टिकोण का उदाहरण है। पल्टा ने आगे कहा, हमने आईसीआईसीआई प्रू गारंटीड पेंशन प्लान फ्लेक्सी को देश की आबादी के एक बड़े हिस्से को सेवानिवृत्त होने से पहले ही अपनी योजना बनाने में सक्षम बनाने के लिए डिज़ाइन किया है, जिससे उन्हें अपनी वांछित सेवानिवृत्ति निधि बनाने के लिए लंबी अवधि में वॉलेट-फ्रेंडली योगदान करने की सुविधा मिलती है।

अपर महाप्रबन्धक सहित रेलकर्मियों ने संविधान उद्देशिका को दोहराया

मॉर्निंग न्यूज @ जयपुर

संविधान दिवस के अवसर पर उद्देशिका के वाचन को उत्तर पश्चिम रेलवे प्रधान कार्यालय में अशोक माहेश्वरी अपर महाप्रबन्धक उत्तर पश्चिम रेलवे सहित रेलकर्मियों ने दोहराया। उत्तर पश्चिम रेलवे के मुख्य जन सम्पर्क अधिकारी कैप्टन शशि किरण के अनुसार अशोक माहेश्वरी अपर-उत्तर पश्चिम रेलवे व रेलकर्मियों ने संविधान दिवस के अवसर पर रेलकर्मियों को संविधान दिवस उद्देशिका हम भारत के लोग, भारत को एक बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को समाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए, तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढाने के लिए दृढ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं, का वाचन किया गया। संविधान दिवस रेलवे के सभी मण्डलों, कारखानों, यूनिटों, रेलवे स्टेशनों,

रेलवे स्कूलों तथा रेलवे प्रशिक्षण संस्थानों में मनाया गया तथा डिजीटल माध्यमों तथा सोशल मीडिया पर संविधान दिवस उद्देशिका तथा मौलिक कर्तव्यों को प्रदर्शित किया गया।

आरआरआर सेंटर के माध्यम से जरूरतमंदों तक पहुंचा आवश्यक सामान

मॉर्निंग न्यूज @ जयपुर। नगर निगम ग्रेटर द्वारा 18 नवंबर 2024 से प्रारंभ हुए जयपुर समारोह-2024 के अन्तर्गत प्रतिदिन कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। मंगलवार को कलैक्शन ड्राइव के माध्यम से आरआरआर सेंटर पर आये हुये सामान को कच्ची बस्तियों एवं आंगनबाडी केन्द्रों पर वितरित किया गया। इन सामानों के अन्तर्गत स्टेशनरी, खिलौने, पुराने कपडे आदि सामान दिये गये, जिसे पाकर जरूरमंदों एवं बच्चों ने

खुशी जाहिर की। मुरलीपुरा जोन में हुये कार्यक्रम के अन्तर्गत आंगनबाडी केन्द्र एवं वार्ड नं. 8 में कच्ची बस्तियों में कपडे, जूते, खिलौने, स्टेशनी इत्यादि सामान वितरित किये गये। इसी प्रकार अन्य जोनों में भी स्थापित क्रक्रक सेंटर पर आये हुये सामान को निकटतम आंगनाबाडी केन्द्रों एवं कच्ची बस्तियों में पहुंचाया गया। आयोजनों की श्रृखंला के अन्तर्गत बुधवार को मालवीय नगर जोन में श्रमदान कार्यक्रम आयोजन किया जायेगा। जिसमें एनएसएस, स्काउड गाइड के बच्चे भी सम्मिलित होकर श्रमदान में भाग लेंगे।